बहन मीरा की गांधी टॉक्स का टीजर है अमेजिंग : प्रियंका

ग्लोबल आइकॉन प्रियंका चोपड़ा जोनस ने अपनी बहन मीरा चोपड़ा की डेब्यू प्रोडक्शन फिल्म गांधी टॉक्स के टीज़र को सोशल मीडिया पर साझा करते हुए खुलकर सराहना की है.

प्रियंका ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर टीज़र शेयर करते हुए इसे 'अमेज़िंग' बताया, जिससे फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच उत्सुकता और भी बढ़ गई है.

प्रियंका का यह समर्थन न सिर्फ बहन के प्रति उनके प्यार को दर्शाता है, बल्कि मीरा के कंटेंट-ड्रिवन सिनेमा की ओर बढ़ाए गए साहसी कदम की सराहना भी करता है.

किशोर बेलेकर के निर्देशन में बनी गांधी टॉक्स एक मूक (साइलेंट) और ध्यानात्मक फिल्म है, जिसे इसकी अनोखी कहानी कहने की शैली सबसे खास बना देती है. यह फिल्म संवादों के बजाए विज़ुअल्स, अभिनय और भावनाओं के माध्यम से अपनी बात कहती है, जो दर्शकों को एक गहरे और आत्ममंथन भरे अनुभव में ले जाती है.

फिल्म से जुड़े होने पर ऑस्कर विजेता संगीतकार ए. आर. रहमान ने भी इसकी अनूठी सोच और विज़न की सराहना की है. रहमान का समर्थन फिल्म की भावनात्मक गहराई और सादगी को और मजबूती देता है तथा इसके रचनात्मक दृष्टिकोण की पुष्टि करता है.

मीरा चोपड़ा के प्रोडक्शन हाउस पिंकमून मेटा स्टूडियोज़ के बैनर तले बनी यह फिल्म, निर्माता के रूप में उनके करियर की एक महत्वपूर्ण शुरुआत है.

कलाकारों ने कहा, 'बेटियां हैं जीवन का सबसे अनमोल उपहार'!

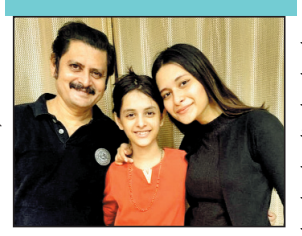

नेशनल गर्ल चाइल्ड डे पर एण्डटीवी के जाने-माने कलाकारों हर्ष वशिष्ठ ('घरवाली पेड़वाली' में रमेश), योगेश त्रिपाठी ('हप्पू की उलटन पलटन' में दरोगा हप्पू सिंह) और रोहिताश्व गौड़ ('भाबीजी घर पर हैं' में मनमोहन तिवारी) ने दिल से जुड़ी, सरल लेकिन असरदार बातें साझा कीं. उनका कहना है कि बेटियां सिर्फ परिवार की शान नहीं होतीं, बल्कि हर दिन जीवन को बेहतर बनाने की सीख देती हैं. उन्होंने बताया कि बेटियां उनके जीवन की असली स्टार्स हैं, जो उन्हें निरंतर प्रेम एवं धैर्य सिखाती हैं और जिंदगी जीने का नया नजरिया देती हैं. 'घरवाली पेड़वाली' में रमेश की भूमिका निभा रहे हर्ष वशिष्ठ कहते हैं, 'मेरी बेटी रक्षा का पिता बनना मेरे जीवन का सबसे बड़ा बदलाव रहा है. उसने मुझे माफ करना और छोटी-छोटी बातों को छोड़ना सिखाया है. जब भी मैं किसी बात से परेशान या निराश होता हूं, वह प्यार से कहती है- 'पापा, कोई बात नहीं, गलती तो सब से हो जाती है.' बात छोटी है, लेकिन असर बहुत गहरा होता है. इतनी कम उम्र में उसकी समझदारी और संवेदनशीलता मुझे हर दिन एक इंसान और एक पिता के रूप में और बेहतर बनने की प्रेरणा देती है.

फिल्म बार्डर 2 की रिलीज से पहले फिल्मी सफर को याद किया

बॉलीवुड अभिनेता अहान शेट्टी ने अपनी आने वाली फिल्म बार्डर 2 की रिलीज से पहले अपने फिल्मी सफर को याद किया है.

अहान शेट्टी इन दिनों अपनी आने वाली फिल्म बार्डर 2 को लेकर चर्चा में हैं.अहान ने फिल्म बार्डर 2 की रिलीज के पहले अपने फिल्मी सफर को याद किया है. अहान ने इस पोस्ट में अपनी पहली फिल्म 'तड़प' से लेकर अपने अब तक के सफर को याद किया. अहान ने लिखा कि 'तड़प' उनके लिए सपने की शुरुआत थी, जिसमें उम्मीद, डर और कई भावनाएं शामिल थीं. उन्होंने बताया कि इसके बाद की राह उनके लिए आसान नहीं थी. कई बार अनिश्चितता आई, खामोश संघर्ष रहे, लेकिन इन सबने उन्हें धैर्य और सबक सिखाया.उन्होंने लिखा 'तरक्की और अनुभव बिना दर्द के नहीं मिलते हैं, इन अनुभवों ने मुझे आज एक बेहतर इंसान बना दिया, जिसके लिए मैं दिल से आभारी हूं.

अहान ने लिखा '23 जनवरी 2026 को अब बस कुछ ही समय बचा है और मेरी दूसरी फिल्म 'बॉर्डर 2' के आने में. मेरे लिए यह एक नए अध्याय की शुरुआत है, जो धैर्य, मेहनत और विश्वास से जन्मी है. आज दिल पहले से ज्यादा मजबूत है, भरोसा गहरा है और सपना पहले से कहीं ज्यादा ताकतवर है. 'उम्मीद है आप हमारे साथ खड़े होंगे, इस सफर को महसूस करेंगे और इस फिल्म को दिल से अपना समर्थन देंगे.आपका साथ मेरे लिए शब्दों से कहीं ज्यादा मायने रखता है.

अनुराग सिंह द्वारा निर्देशित बॉर्डर 2 में सनी देओल, वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी, मोना सिंह, मेधा राणा, सोनम बाजवा और अन्या सिंह शामिल हैं.फिल्म बॉर्डर 2 का निर्देशन अनुराग सिंह ने किया है. इस फिल्म को जेपी दत्ता और निधि दत्ता ने टी-सीरीज के साथ मिलकर प्रोड्यूस किया है.

यश राज फिल्म्स ने जारी किया 'मर्दानी 3' का नया ट्रैक

यश राज फिल्म्स ने अपनी आने वाली फिल्म 'मर्दानी 3' का नया ट्रैक रिलीज कर दिया है. ब्लॉकबस्टर फ्रेंचाइजी मर्दानी की तीसरी किस्त में रानी मुखर्जी एक बार फिर दमदार, निडर और जांबाज पुलिस अधिकारी शिवानी शिवाजी रॉय के रूप में वापसी कर रही हैं, जो एक क्रूर सामाजिक अपराध के खिलाफ मोर्चा संभालती नज़र आएंगी.

93 लापता लड़कियों को समय के खिलाफ जंग लड़ते हुए बचाने की इस कहानी को लेकर दर्शकों की उत्सुकता लगातार बढ़ रही है. इसी बीच यश राज फिल्म्स ने इस फिल्म का एक नया गीत रिलीज किया है, जो रानी मुखर्जी की पावर-पैक मौजूदगी का जश्न मनाता है.

'बब्बर शेरनी' शीर्षक से आया यह गीत शिवानी की प्रभावशाली आभा को और मजबूत करता है और समाज की महिलाओं को 'बब्बर शेरनी' के रूप में सलाम करता है. इस गीत को सार्थक कल्याणी ने कंपोज़, प्रोड्यूस और अरेंज किया है, इसके बोल श्रुति शुक्ला ने लिखे हैं और इसमें डी एमसी का प्रभावशाली रैप सेगमेंट भी शामिल है. रानी मुखर्जी ने इस गीत के बारे में बात करते हुए कहा, ''बब्बर शेरनी' फिल्म की आत्मा का एक सशक्त ध्वन्यात्मक रूप है. यह मर्दानी की अडिग भावना को पूरी ताक़त के साथ दर्शाता है और हमारे समाज की महिलाओं को 'बब्बर शेरनी' के रूप में सम्मानित करता है.

यह गीत सच्चाई, दृढ़ संकल्प और अडिग साहस से भरा हुआ है, ठीक वैसे ही जैसे शिवानी शिवाजी रॉय का व्यक्तित्व. 'बब्बर शेरनी' एक महिला की ताक़त, उसके संकल्प और समाज में बदलाव लाने की उसकी जिद को सलाम है.

रोहित की दाढ़ी ने बढ़ाया सस्पेंस

अभिनेता रोहित सराफ का नया दाढ़ी वाला लुक सोशल मीडिया पर सबका ध्यान खींच रहा है.

रोहित सराफ का ट्रांसफॉर्मेशन हमेशा चर्चा में रहता है. फिर चाहे सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी में उनका बॉय-नेक्स्ट-डोर लुक हो या सीरीज 'द रिवोल्यूशनरीज़' के लिए खुद को पूरी तरह ढालना. लेकिन हाल ही में उनका नया दाढ़ी वाला लुक सोशल मीडिया पर सबका ध्यान खींच रहा है.अब फैंस अंदाज़ा लगा रहे हैं कि ये लुक उनके किसी नए किरदार के लिए है या उन्होंने यूं ही दाढ़ी बढ़ा ली है.

रोहित ने अपने सोशल मीडिया पर अपनी नई तस्वीरें शेयर की हैं. इन तस्वीरों में वह स्ट्राइप्ड डबल-ब्रेस्टेड कोट, चारकोल डेनिम्स, क्लासिक घड़ी और फॉर्मल जूतों में नजर आ रहे हैं. लेकिन सबसे ज़्यादा ध्यान उनकी बिखरी हुई हेयरस्टाइल और घनी दाढ़ी ने खींचा.इन तस्वीरों के बाद से चर्चा तेज़ हो गई है कि क्या ये उनके अगले किरदार का लुक है. यदि ऐसा है, तो दर्शकों के लिए ये किसी विज़ुअल ट्रीट से कम नहीं होगा.

सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी में शानदार और दिल छू लेने वाली परफॉर्मेंस के बाद रोहित सराफ अब अपनी अगली सीरीज़ 'द रिवोल्यूशनरीज़' के लिए तैयार हैं. यह सीरीज़ उन युवा भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की कहानी दिखाती है, जो मानते थे कि अंग्रेज़ी हुकूमत को खत्म करने के लिए सशस्त्र संघर्ष ज़रूरी था. रोहित इस सीरीज़ की शूटिंग पूरी कर चुके हैं.

निखिल आडवाणी के निर्देशन में बनी इस पीरियड ड्रामा सीरीज़ में रोहित सराफ के साथ भुवन बाम, प्रतिभा रांटा, गुरफतेह पीरज़ादा और जेसन शाह भी नजर आएंगे. यह सीरीज़ संजीव सान्याल की मशहूर किताब 'रेवोल्यूशनरीज़: द अदर स्टोरी ऑफ़ हाउ इंडिया वोन इट्स फ्रीडम' पर आधारित है.यह सीरीज प्राइम वीडियो पर दुनिया भर के 240 से ज्यादा देशों और क्षेत्रों में रिलीज़ होगी.

फिल्म 'थर्सडे स्पेशल' को विक्रमादित्य मोटवानी प्रस्तुत करेंगे

फिल्मकार शूजित सरकार और विक्रमादित्य मोटवानी, वरुण टंडन की शॉर्ट फिल्म 'थर्सडे स्पेशल' को प्रस्तुत करने के लिए आगे आए हैं.

प्रेम, साथ और बदलाव की कोमल कहानी कहने वाली इस फिल्म को दोनों दिग्गज निर्देशकों का समर्थन मिला है. प्रेस नोट के अनुसार, 'थर्सडे स्पेशल' में अनुभा फतेहपुरिया और रमाकांत दयामा मुख्य भूमिकाओं में हैं. फिल्म की कहानी राम और शकुंतला नामक एक बुज़ुर्ग दंपति के इर्द-गिर्द घूमती है, जिन्हें वर्षों का वैवाहिक जीवन, खाने के प्रति साझा प्रेम और हर गुरुवार की एक खास रस्म आपस में जोड़ती है. 'पीकू', 'विकी डोनर' और 'अक्टूबर' जैसी फिल्मों के निर्देशक शूजित सरकार ने फिल्म की सादगी और संवेदनशील कहानी की सराहना की. उन्होंने कहा, 'थर्सडे स्पेशल ने अपनी सरलता और सौम्य कहानी कहने के अंदाज़ से मुझे गहराई से प्रभावित किया. वरुण ने साथ, उम्र बढ़ने और प्रेम को

बहुत ही परिपक्व और भावनात्मक तरीके से दिखाया है. यह विवाह और मध्य आयु के रिश्तों पर एक नाजुक लेकिन प्रभावशाली दृष्टि है, जो खासतौर पर एक युवा फिल्मकार के लिए प्रशंसनीय है.' सरकार ने इस फिल्म की तुलना अपनी अप्रदर्शित फिल्म 'शू बाइट' से भी की, जिसमें अमिताभ बच्चन ने अभिनय किया था. समकालीन भारतीय सिनेमा को नयी पहचान देने वाले विक्रमादित्य मोटवानी ने कहा कि फिल्म में उन ज़िंदगियों को केंद्र में रखा गया है, जिन्हें आमतौर पर पर्दे पर जगह नहीं मिलती.

उन्होंने कहा, 'थर्सडे स्पेशल देखते समय मुझे यह अहसास हुआ कि हम मानवीय कहानियां तो कहते हैं, लेकिन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में मौजूद कई अनकही कहानियों को अक्सर भूल जाते हैं, खासकर उन लोगों की जिनसे हम असाधारण कहानियों की उम्मीद नहीं करते.'

नया शो हे भगवान- कितना बदल गया इंसान! 'जल्द शुरू

एण्डटीवी अपने दर्शकों को हल्के-फुल्के, दिल को छू लेने वाले और मज़ेदार मनोरंजन देने के वादे के साथ पेश कर रहा है नया शो 'हे भगवान कितना बदल गया इंसान'! यह एक मज़ेदार और प्यार से भरी दिव्य कहानी है, जिसमें रोज़मर्रा की जिंदगी की हल्की-फुल्की हंसी और थोड़ी-सी पौराणिक ट्विस्ट है. यह शो परिवार के हर सदस्य को हंसाते हुए जोड़ने का वादा करता है. कहानी कुछ ऐसी है कि उज्जैन के ईमानदार वकील महेश शर्मा हमेशा सच बोलते हैं, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो. इसी वजह से घर, कोर्ट और शहर में मज़ेदार और अजीब हालात बनते रहते हैं. जब भगवान शिव उनके पास आते हैं, तो उनके साथ की छोटी-छोटी घटनाएँ दिल को छू लेने और हंसाने वाली बन जाती हैं.

स्केच से गानों तक : 'वसुधा' के सेट पर प्रिया को जहां मिलता है सुकून

शो 'वसुधा' में वसुधा का किरदार निभा रहीं अभिनेत्री प्रिया ठाकुर ने अपने मेकअप रूम को अपना पर्सनल सेफ कॉर्नर बना लिया है. यह जगह उनकी सादगी भरी और जमीन से जुड़ी पर्सनैलिटी को भी दिखाती है और सेट की भागदौड़ के बीच उन्हें अपना सा सुकून भी देती है.

शूटिंग के लंबे घंटों में प्रिया ने अपने मेकअप रूम को बहुत प्यार से सजाया है, ताकि वहां बैठते ही मन अच्छा ल गे और माहौल पॉजिटिव रहे. अपनी बनाई हुई स्केच से लेकर सोच समझकर लगाए गए पोस्टर्स तक, कमरे का हर कोना उनके अपने टच से भरा हुआ है. यही वजह है कि शूट के बीच उनके को- एक्टर्स और दोस्त भी वहां आकर थोड़ा वक्त बिताना पसंद करते हैं. इस बारे में प्रिया ने कहा, 'मैं सेट पर 12 से 15 घंटे रहती हूं और घर सिर्फ सोने जाती हूं, इसलिए मेरी कोशिश रहती है कि मेरा मेकअप रूम सबसे अच्छा लगे और मेरे अपने सेफ कॉर्नर जैसा हो. मेरे कमरे में मैंने खुद बनाए हुए कई कबूतरों के स्केच रखे हैं, क्योंकि कबूतर शांति का प्रतीक होते हैं.

कृषि जगत

बकरी के बच्चों की देखभाल

बकरी और भेड़ पालन में सबसे ज्यादा मुनाफा बच्चों से ही होता है. जितने ज्यादा बच्चे होंगे उतना ही मुनाफा होगा. इसकी एक बड़ी वजह ये भी है कि गाय-भैंस में मुनाफे का एक बड़ा हिस्सा दूध उत्पादन से मिलता है. जबकि भेड़-बकरियों में ऐसा नहीं है. इसीलिए केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा के एक्सपर्ट सलाह देते हैं कि जन्म से लेकर 20 दिन का होने तक भेड़-बकरियों के बच्चों की खास तरह से देखभाल करनी चाहिए. इसमे उन्हें दी जाने वाली खुराक भी शामिल है. पशुपालकों की कुछ लापरवाही के चलते भेड़-बकरियों के बच्चों की मृत्यु दर बढ़ने लगती है. जिसका पशुपालकों को खासा नुकसान उठाना पड़ता है.

लेकिन बहुत छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर जन्म लेने वाले बच्चों की मृत्यु दर को कम किया जा सकता है. बकरी पालन मीट और दूध दोनों के लिए किया जाता है. लेकिन दोनों में ही मुनाफे के लिए ये जरूरी है कि बकरी साल में दो बार जो दो-दो बच्चे देती है वो जिंदा रहें. क्योंकि खासतौर पर मीट के लिए छह-छह महीने की उम्र वाले बच्चों के अच्छे दाम मिलना शुरू हो जाते हैं. वहीं एक साल का होने पर बच्चे देने के साथ ही दूध के लिए तैयार हो जाते हैं.

गोट एक्सपर्ट इकबाल मोहम्मद का कहना है कि बकरी के बच्चों की मृत्यु दर कम करने के लिए ये जरूरी है कि हम उसकी देखभाल के साथ ही उसके खानपान का भी ध्यान रखें.

आम के बाग में फूल की जगह न निकल आएं पत्तियां

आम की खेती में दिसंबर और जनवरी का महीना सबसे अहम होता है. इसी समय पेड़ के अंदर यह तय होता है कि उसमें नई पत्तियां आएंगी या मंजर. उत्तर भारत की जलवायु में अक्सर लोग गलती यह करते हैं कि इस समय नाइट्रोजन वाली खाद या ज्यादा सिंचाई कर देते हैं, जिससे पेड़ में फूल की जगह नई पत्तियां निकलने लगती हैं.

अगर किसान इस दौरान वैज्ञानिक स्प्रे और सही पोषण का ध्यान नहीं रखते, तो कोहरे और नमी के कारण 'पाउडरी मिल्ड्यू' जैसी फफूंद और 'भुनगा कीट' पूरे मंजर को काला कर सुखा देते हैं. इसके अलावा, बोरॉन और जिंक जैसे सूक्ष्म तत्वों की कमी से फूल कमजोर होकर समय से पहले ही झड़ जाते हैं.

'स्पेशल स्प्रे'- दिसंबर जनवरी में पेड़ की वानस्पतिक वृद्धि को रोककर उसे पुष्पन यानी मंजर देने की दिशा में मोड़ना जरूरी है. इसके लिए पोटैशियम नाइट्रेट 1% का छिड़काव बहुत फायदेमंद होता है, जिससे फूल आने की प्रक्रिया तेज हो जाती है. इसके लिए आम की बागवानी में पैक्लोब्यूट्राजोल सबसे अच्छी तरह काम करता है, जो पेड़ की फालतू बढ़वार को रोकता है और मंजर निकालने में मदद करता है. इसे जनवरी के पहले पखवाड़े तक मिट्टी में डाल देना चाहिए.

इसके साथ ही, फूलों को मजबूती देने के लिए सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे बोरॉन 0.2% और जिंक सल्फेट का छिड़काव बहुत जरूरी है. बोरॉन की कमी से अक्सर फूल सूखकर झड़ने लगते हैं और परागण सही से नहीं हो पाता. इन तत्वों के इस्तेमाल से फल स्वस्थ बनते हैं और उनकी चमक भी बढ़ती है.

मंजर को कीट-बीमारी से बचाएं

मंजर निकलने से ठीक पहले कई खतरनाक कीट और बीमारियां बाग पर हमला करती हैं. इनमें पाउडरी मिल्ड्यू यानी सफेद फफूंद, एन्थ्रेक्नोज और भुनगा कीट प्रमुख हैं. जैसे ही मंजर निकलने की शुरुआत हो, हेक्साकोनाजोल या डाइफेनोकोना जोल जैसे फफूंदनाशक के साथ इमिडाक्लोप्रिड का छिड़काव करना चाहिए. यह सुरक्षा कवच मंजर को शुरुआती संक्रमण से बचाता है.

पशुओं को खिलाएं यह खास खुराक

जैसे ही गाय-भैंस दूध कम देने लगे, चारा कम खाने लगे. इतना ही नहीं दूध में फैट अच्छी नहीं आ रही हो. दूध का एसएनएफ कम हो रहा हो. या फिर पशु का हाजमा खराब हो गया हो और पशु का पेट फूल रहा हो तो पशुपालक परेशान हो उठते हैं. ऐसे में ज्यादातर पशुपालक सबसे पहला काम ये करते हैं कि पशुओं की खुराक में बदलाव कर देते हैं. जैसे खिलाए जा रहे चारे को दूसरे चारे से बदल देते हैं. या फिर खिलाए जा रहे हरे चारे और अनाज में कम या बढ़ोतरी करने लगते हैं. क्योंकि एकदम से चारे को बदलना और उसमे कमी-बढ़ोतरी करना सीधे पशुओं की खुराक और उनकी पाचन क्रिएया पर असर डालता है.

इसलिए एनिमल न्यूट्रीशन एक्सपर्ट ऐसा करते वक्त एक खास चीज को जरूर शामिल करने की सलाह देते हैं, और वो है सोडियम बाइकार्बोनेट (मीठा सोडा). लेकिन इसके साथ ही अलर्ट रहने की भी बहुत जरूरत होती है. क्योंकि पशु चिकित्सों के मुताबिक मीठा सोडा जितना फायदेमंद हैं कभी-कभी उतना ही नुकसानदायक भी साबित हो जाता है.

मीठा सोडा खिलाने के एक्सपर्ट टिप्स - दुधारू पशुओं के लिए मीठा सोडा बहुत ही उपयोगी माना जाता है. पशुपालन में इसका इस्तेमाल खासतौर पर पशु के पाचन को सुधारने और दूध की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए किया जाता है. ये मौका होता है मीठा सोडा खिलाने का-

- जब पशु की खुराक में शामिल दाना अचानक बदला जा रहा हो.
- जब पशुओं की खुराक में अनाज, खली ज्यादा और हरा चारा कम हो.
- अगर पशु जुगाली कम कर रहा है तो उसे मीठा सोडा दे सकते हैं.

मीठा सोडा के फायदे - जब गाय-भैंस या भेड़-बकरी ज्यादा दाना या अनाज खा लेते हैं तो एसिडिटी बढ़ जाती है. मीठा सोडा इस एसिडिटी को कम करके पेट का लेवल संतुलित रखता है.

चने की फसल के लिए घातक हैं ये कीट

रबी सीजन की प्रमुख दलहनी फसल चना देश के लाखों किसानों के लिए आमदनी का अहम जरिया होती है. अच्छी पैदावार की आस लगाकर किसान अपने खेतों में मेहनत करते हैं, लेकिन मौसम में उतार-चढ़ाव के साथ-साथ कीटों का बढ़ता प्रकोप इस फसल के लिए बड़ी चुनौती बन रहा है. खासकर चने में लगने वाले फली छेदक (इल्ली) और कटुआ जैसे कीट और दीमक पौधों के फूल, फलियों और शुरुआती अवस्था में पौधों को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं. कई बार समय रहते इन कीटों की पहचान और रोकथाम न की जाए तो किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है. ऐसे में आइए जानते हैं किसान चने की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों, उनके लक्षण और प्रभावी बचाव उपायों की पूरी जानकारी.

फली छेदक कीट के लक्षण- फली छेदक कीट चने के लिए अधिक हानिकारक माना जाता है. इसके वयस्क कीट को पतिंगा कहा जाता है. इस कीट के बच्चे अपना आहार चने के मुलायम तनों और पत्तियों को बनाते हैं. वहीं, जब पौधे में

फली आने लगती है, तो फिर ये फली को छेदकर अंदर के दाने को खा जाते हैं. इस कीट के लगने पर 30-40 फीसदी तक पैदावार घट सकती है.

फली छेदक कीट से बचाव- चने की फली छेदक कीट से बचाव के लिए फेरोमोन ट्रैप (नर कीट पकड़ने के लिए), नीम आधारित कीटनाशक, और जैविक नियंत्रण अपनाएं,

कटुआ कीट के जानें लक्षण- चने में कटुआ कीट लगने से पौधे जमीन की सतह से कट जाते हैं, जिससे फसल का अंकुरण रुक जाता है और उपज में भारी कमी आती है. वहीं, बात करें इसके लक्षण कि तो फसल में दानों का विकास रुक जाता है और फली खोखली हो जाती है. यह कीट रात में सक्रिय होकर पौधों को काटता है और दिन में मिट्टी के ढेलों के नीचे छिपे रहते है, जिससे आर्थिक नुकसान होता है.

कटुआ कीट बचाव के उपाय- चने को कटुआ कीट से बचाने के लिए खेत के चारों ओर सूरजमुखी जैसी फसल लगाएं, जो कीटों को आकर्षित करती हैं. इसके अलावा खेत में सूखी घास के ढेर बनाएं, ऐसे में कीट दिन में इनमें छिपेंगे, जिन्हें सुबह इकट्ठा करके नष्ट कर दें. वहीं, इसके वयस्क कीट रोशनी की ओर आकर्षित होते हैं, इसलिए लाइट ट्रैप लगाकर उन्हें पकड़ा जा सकता है. साथ ही नीम तेल जैसे जैविक कीटनाशकों का प्रयोग करें.

और फसल चक्र अपनाएं. इसके अलावा मित्र कीटों को बढ़ावा दें और सही समय पर छिड़काव करें, क्योंकि यह कीट फसल को बहुत नुकसान पहुंचाता है.